ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

# भारतीय नवजागरण, गुरूघासीदास और सतनाम–आन्दोलन

# Indian Renaissance, Guru Ghasidas and Satnam - Movement

Paper Submission: 10/06/2021, Date of Acceptance: 22/06/2021, Date of Publication: 23/06/2021

**फुलसो राजेश पटेल**
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
शासकीय शिवनाथ विज्ञान महाविद्यालय, राजनांदगॉव,
(छ.ग.), भारत

**श्रुति गावस्कर**
शोध छात्रा,
इतिहास विभाग,
सी.वी. रमन विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.) भारत

**आई. आर. सोनवानी**
प्राचार्य,
शासकीय रानी अंवन्ति बाई लोधी महाविद्यालय, घुमका,
राजनांदगांव, (छ.ग.) भारत

**सारांश**

भारत के नवजागरण विशेषकर स्वाधीनता आन्दोलन में यहॉ के प्रत्येक धर्म, जाति, समुदाय वर्ग के लोगों का अहम भूमिका रही है। राजा, महाराजा, कृषकों, मजदूरों, सन्तों, महात्माओं का स्मरणीय योगदान रहा है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौर में भारत का कोना–कोना स्वाधीनता आन्दोलन का केन्द्र बन गये थे। छत्तीसगढ़ अंचल इससे अछुता नही था। इस अंचल में नवजागरण का सूत्रपात करने वाला और स्वाधीनता का प्रेरक शाक्ति सन्त गुरूघासीदास थे। उन्होनें सन् 1820 से 1830 तक सतनाम आन्दोलन बड़ी तीव्रता से संचालित कर पतनावस्था से लोगों को उन्मुक्त किया था।

वस्तुतः सतनाम आन्दोलन आरम्भिक अवस्था से महज एक सामाजिक एवं धार्मिक क्रांति ही नही थी बल्कि यह सुधारवादी, परिवर्तनवादी जनतंत्रवादी, मानवतावादी और राष्ट्रवादी आन्दोलन था। सतनाम आन्दोलन में क्रांतिकारी सुधारवाद के लक्षण पाई जाती है जिसका जरूरत नवजागरण, भारत की आजादी और भारतीय लोकतंत्र के निमित्त वांछनीय था।

गुरूघासीदास धार्मिक, अन्धविश्वासों, कर्मकाण्डों, जाति भेद, अस्पृश्यता, तमाम कुप्रथाओं शोषण–दमन तथा सभी प्रकार के सामाजिक अन्याय अत्याचार जुल्म आदि के खिलाफ खुल्म–खुल्ला विद्रोह कर नवजागरण की किरणों को जन–जन तक पँहुचाया। उन्होनें साम्राज्यवादी और सामंतवादी व्यवस्था पर कड़ा प्रहार कर जनतांत्रिक सोच को लोगों में बढ़ाया। फलस्वरूप पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए जनमानस में साहस का संचार हुआ और भारतीय राष्ट्रीयता को सबंल मिला यही वजह है कि अंचल में आजादी के आन्दोलन के प्रत्येक मोर्चे पर सफलता मिली। आगे चलकर गांधी जी ने सतनाम आन्दोलन के विचार धारा से प्रभावित होकर सत्याग्रह आन्दोलन का बुनियादी आधार बनाया था।

People of every religion, caste, community class have played an important role in the renaissance of India, especially in the freedom movement. There has been a memorable contribution of kings, maharajas, farmers, laborers, saints, Mahatmas. During the freedom movement, every nook and corner of India had become the center of the freedom movement. Chhattisgarh region was not untouched by this. In this region, the founder of the renaissance and the inspiration of independence was the Shakti saint Guru Ghasidas. From 1820 to 1830, he freed the people from the decline by conducting the Satnam movement with great intensity.

In fact, the Satnam movement was not only a social and religious revolution from the initial stage, but it was a reformist, revolutionary democratic, humanist and nationalist movement. The characteristics of revolutionary reformism are found in the Satnam movement, which was needed for the sake of renaissance, India's independence and Indian democracy.

Guru Ghasidas openly revolted against religious, superstitions, rituals, caste discrimination, untouchability, all kinds of evil practices, exploitation-oppression and all kinds of social injustice, atrocities, atrocities etc. and brought the rays of renaissance to the masses. He raised democratic thinking among the people by attacking the imperialist and feudal system. As a result, courage was infused in the public to break the shackles of independence and Indian nationalism was strengthened, which is why the freedom movement in the region got success on every front. Later on, Gandhiji, influenced by the ideology of the Satnam movement, made the basic basis of the Satyagraha movement.

**मुख्य शब्दः** गुरूघासीदास धार्मिक, अन्धविश्वासों, कर्मकाण्डों, जाति भेद, अस्पृश्यता।
Guru Ghasidas Religious, Superstitions, Rituals, Caste Discrimination, Untouchability.

**प्रस्तावना**

पंथ का इतिहास एवं इसके सांस्कृतिक उपादान, उत्पत्ति काल से ही (सन् 1557) सुधारवादी, जनतंत्रवादी और राष्ट्रवादी रहा है। भारतीय संस्कृति के संपोषण और संवर्धन में भी सतनामी परम्परा की उल्लेखनीय भूमिका रही है, मध्यकालीन सतनाम–आन्दोलन, भक्ति आन्दोलन की एक शाखा बनकर प्रारम्भ हुआ था। [1] यह आन्दोलन सामाजिक एवं धार्मिक क्रांति ही नही बल्कि मानवतावादी, परिवर्तनकारी, जनवादी और राष्ट्रवादी बहुआयामी आंदोलन था। [2] इसकी संपुष्टि मुगलकालीन सन् 1672 के सतनामी विद्रोह से होती है। मुगलकालीन साम्राज्यवाद और धर्मान्धता के विरूद्ध इस संघर्ष में हजारों की संख्या में सतनाम – पंथ के अनुयायी बलिदान हो गये जो बचे वे मुगलों की अधीनता स्वीकार करने के बजाय या फिर जीवन–यापन के उद्देश्य से भारत के अन्य क्षेत्रों में यथा – उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, उडीसा, छत्तीसगढ़ पहुंचकर बस गये। कालान्तर में बंगाल और आसाम में भी इस सम्प्रदाय का विस्तार हुआ। यह समय सतनाम आन्दोलन का प्रारम्भिक काल था। [3]

**अध्ययन का उद्देश्य**

भारत विश्व का सबसे विशाल लोकतांत्रिक और पंथ निरपेक्ष राष्ट्र है। यही कारण है कि दुनिया के सभी लोकतांत्रिक देशों के लिए– प्रेरणा–स्त्रोत बना हुआ है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास भी समूचे विश्व में अपने अनुपम विलक्षणता के कारण एक अद्वितीय मिशाल के रूप में कायम है जो सबको स्वीकार्य है।

भारत का नव जागरण हो या स्वतंत्रता आन्दोलन इस दिशा में किसी भी व्यक्ति समाज या वर्ग का अवदान राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण किये बिना नही रह सकता। इसलिए संकुचित नजरिये से नही विराट द्वष्टिकोण से मूल्यांकिंत कर उनके महत्व को स्थापित करना लाजमि होगा। इस संदर्भ में सन्त गुरूघासी दास के कार्यो एवं उनके द्वारा संचालित सतनाम आन्दोलन को रेखाकिंत कर राष्ट्रीय इतिहास में जोड़ना या राष्ट्रीय परिदृश्य में स्थापित करना प्रासंगिक है, जो इस शोध–पत्र का मूल उद्देश्य है।

**विषय विस्तार**

सतनाम–आन्दोलन का द्वितीय काल बाबा गुरूघासीदास जी के आविर्भाव काल से प्रारंभ होता है। बाबा गुरूघासीदास जी का युग पराधीनता और सांस्कृतिक पराभव का काल था। सांस्कृतिक गौरव की जड़े हिल चुकी थी, पाश्चात्य सांस्कृतिक की भूल–भूलैया में लोग अपनी संस्कृति के आदर्शो और जीवन मूल्यों को खो चुके थे। सशक्त वर्णवाद, अपरिवर्तनशील जाति व्यवस्था और तरह–तरह की औचित्यविहिन परम्पराओं एवं मान्यताओं के कारण भारतीय समाज की गयात्मक शक्ति क्षीण हो चुकी थी। [4]सत्य, अंहिसा और प्रेम का संदेश मात्र उपदेश बनकर रह गया था। ''सर्व भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तुनिरामया'' जैसे कल्याणकारी संदेश अप्रासंगिक हो चुके थे। ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की आवधारणा स्थापित करने वाले भारत की प्राचीन प्राण शाक्ति सुषुप्त हो चुकी थी तथा जीवन और सृजन का वृहत्तर विचार समाप्त हो चुका था। उन्मुक्त विवेक आदि चिंतन का अभाव था तथा सामाजिक और राष्ट्रीय विकास के प्रयासों में विराम लग चुका था। [5]

प्रायः इतिहासकार भारतीय नवजागरण के तौर तरीके, उसकी समग्रता और उसमें छिपे अंतर्भाव को समझे बिना मोटे तौर पर राजा राममोहनराय के समय से भारतीय पुर्नजागरण की शुरूवात मानते हैं, बाबा गुरूघासीदास जी के सुधार आंदोलनों को राष्ट्रीय पुर्नजागरण की श्रृंखला में स्थापित करने में परहेज करते हैं। गुरूघासीदास जी भारत के सांस्कृतिक नवजागरण के गुरू थे। गुरूजी राजाराम मोहन राय के पहले ही सतनाम पंथ की स्थापना कर सन् 1820 में सतनाम आंदोलन चलाये थे। फलतः भारतीय नवजागरण पल्लवित हुआ गुरूघासीदास जी का नवजागरण भारतीय लोक परम्परा से उद्भूत था, जबकि राजा राममोहन राय का नवजागरण पश्चिमी परम्परा से अनुस्यूत था। डॉ. हीरालाल शुक्ल ने कहा कि सन्त गुरू घासीदास भारत में नवजागरण की रश्मि फैलाई। उन्होनें नवजागरण की आत्मा को समाज तक पहुँचाया। [6]

भारतीय नवजागरण की समग्र व्याख्या कर विराट दृष्टि से भारतीय नवजागरण के आयामों में विशेष कर राष्ट्रीय पटल में गुरूघासीदास जी के सुधार कार्यो को मुल्यांकित करके उसे स्थापित करना प्रासंगिक होगा अन्यथा नवजागरण की ऐतिहासिक विकास प्रक्रियाओं में एक महत्वपूर्ण अंग को नजर अंदाज करना या दूसरे अर्थो में नवजागरण की गम्भीरता और विशिष्टताओं को सही मायने में अधूरा समझने के समान होगा। यदि समाज के निचले स्तर पर होने वाले खलबलियों, बदलाओं तथा सुधार के प्रयत्नों को इतिहास का विषय बनाया जाय तब कही इतिहास की व्यापकता और समग्रता लगभग पूरी हो पाती है। [7] किसी देश या प्रदेश के सामाजिक–सांस्कृतिक आन्दोलन को नवजागरण कहा जाता है, उसमें सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न शामिल रहता है। निम्नवर्गीय लोगों और स्त्रियों की स्थिति को बेहतर बनाने का प्रयास, नवजागरण का अंग कहलाता है। धार्मिक सुधार, अंध–विश्वासों के विरूद्ध प्रचार, नवजागरण के अन्तर्गत शामिल रहता है यदि नवजागरण समाज में मौलिक परिवर्तन का ध्येय लेकर बढ़ता है तो वह स्वाधीनता आन्दोलन की प्रेरक शक्ति बनता है। [8] हां इतना जरूर है कि कोई भी नवजागरण हो, उसका जातीय स्वरूप अवश्य रहेगा। जातीय जागरण को ही अक्सर नवजागरण कहा जाता है। [9] इस प्रकार हर नवजागरण जातीय संगठन और विकास में सहायक होता है और यही राष्ट्रीय चेतना और विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। भारत मे कोई भी जातीय जागरण या प्रदेशगत स्वाधीनता आंदोलन राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण किये बिना नही रह सकता [10] भले ही किसी का प्रभाव सीमित अथवा व्यापक हो वह अलग बात है बंगाल के सन्यासी विद्रोह

का प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित था, पर उसके राष्ट्रीय महत्व को अस्वीकार करना गलत होगा। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव अधिक था, पर उसका मुख्य क्षेत्र हिन्दी भाषीय प्रदेश था। अतः इसके जातीय स्वरूप को नकारना गलत होगा। [11] भारत की भक्ति आंदोलन बहुराष्ट्रीय आन्दोलन का श्रेष्ठ उदाहरण है। भक्ति आन्दोलन में निम्न वर्ग के लोगों मुसलमानों और स्त्रियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया । इसलिए उस आंदोलन ने सीमित नवजागरण का नही व्यापक लोकजागरण का रूप लिया। [12] सामाजिक, विषमता और साम्प्रदायिक भेदभाव दूर करने में उसकी भूमिका युगान्तकारी थी। भक्ति आन्दोलन जैसे लोकजागरण बना वैसे ही देश के एक विशाल भू–भाग में सन् 1857 का स्वाधीनता संग्राम, जन आन्दोलन बना। इसी तरह सतनाम आंदोलन का वृहत्तर राष्ट्रीय विचार, नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की प्रेरक शक्ति बनकर सत्याग्रह आंदोलन में अन्तर्वेशित हो गया और भारत की आजादी तक गतिशील रहा इस प्रकार बाबा गुरूघासीदास जी के सामाजिक धार्मिक सुधारकार्य तथा राजनैतिक विचार उनके द्वारा संचालित सतनाम आंदोलन के सिद्धान्त , कार्यक्रम, उद्देश्य फलस्वरूप सामाजिक जागरण भारतीय नवजागरण और स्वतंत्रता आंदोलन की दृष्टि से प्रभावकारी है। [13] 18दिसम्बर 1756 ईसवी में भारतीय

नवजागरण के युग पुरूष बाबा गुरूघासीदास जी का जन्म हुआ। इसके छः माह पश्चात 23 जून 1757 को प्लासी का युद्ध हुआ और अंग्रेजो ने बंगाल में नई अलमदारी कायम की फिर क्रमशः ब्रिटिश साम्राज्यवाद रूपी रथ चक्र भारत के अन्य प्रांतो में घूमता गया। भारतीय नरेश इस रथ चक्र के नीचे धराशायी होते गये और अंग्रेज भारत के हुकूमदार बन गये। वस्तुतः एक तरफ ब्रिटिश सत्ता की स्थापना हुई और दूसरी तरफ ब्रिटिश सत्ता के प्रतिरोध में नवजागरण की हलचल और उबाल आने से विद्रोह की ज्वालामुखी भिन्न–भिन्न रूप में फूटने लगी। गुरू जी के सतनाम आन्दोलन में प्रसिद्ध कवि शैली के समान जनतांत्रिक क्रान्ति का विचार मिलता है। इस मायने में वें जनवादी आन्दोलन के प्रबल समर्थक थे। गुरूजी के इस आन्दोलन में मार्क्स की क्रांन्ति समाजवादी विचार धारा का संप्रेषण है। उनके सतनाम आन्दोलन के सुधार चक्र में सुकरात, एगेल्स के समान धार्मिक अन्धविश्वासों, कर्मकाण्डों तथा कांट की भांति हर तरह के सामाजिक अन्याय को विरोध दर्शित होता है।

बाबा गुरूघासीदास जी सांस्कृतिक पुनरूत्थान की दृष्टि से धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति के जनक तथा राजनौतिक पहलू में क्रांतिकारी सुधारवाद के हिमायती थे। [14] उनके द्वारा प्रणीत सतनाम आंदोलन, पुरोहितवाद के खिलाफ समझौता विहिन संघर्ष और लोकाधिकार के प्रति चेतनामूलक मुहिम था। [15] बाबाजी द्वारा प्रतिपादित सतनाम–दर्शन विवेकवादी दर्शन था, उन्होनें धार्मिक अंधविश्वासों, रूढ़ियों, कर्मकाण्डों, जातिवाद, ऊँच–नीच, छुआ–छूत और एकांगी उन्नति के विरूद्ध लोक मानस को उन्मुक्त कर सर्वोन्नति और समग्र जागरण के उदान्त विचार को विकसित किया। पुरोहित वाद और सामंतवाद के बने हुए ढांचे को ध्वस्त कर, लोकतांत्रिक सोच को बढ़ाना तथा सार्वभौमिक उन्नति के आयामों को स्थापित करना सतनाम आन्दोलन का एक लक्ष्य था। [16] वे अंग्रेजी राज के संदर्भ में साम्राज्यवाद, भारत की मौजूदा सामंती संरचना, तदानुकूल राजनौतिक हालात और अंग्रेजों के मौसेरे–भाई, समझे जाने वाला शासक वर्ग (सामंतवर्ग) के खिलाफ खुल्लम–खुल्ला विद्रोह कर चुके थे। वास्तव में उनके द्वारा संचालित सतनाम आन्दोलन विकासशील और जनवादी आन्दोलन था परन्तु सामन्तवादी समीक्षक, साम्राज्यवादी विरोधी आन्दोलन को आगे बढ़ाने की जरूरतों से मेंल नही खाते, इस प्रकार की दलील देते हुए इसे केवल सामाजिक विद्रोह के खाते में डाल देते हैं, [17] जबकि वास्तव में सतनाम आन्दोलन सुधारवादी आन्दोलन था और गुरूघासीदास जी क्रांतिकारी सुधारवाद के प्रबल समर्थक थे। यहां पर सुधारवाद को समझना उचित होगा, सुधारवाद के दो पहलू होते हैं– एक औपनिवेशिक सुधारवाद और दूसरा क्रांतिकारी सुधारवाद, औपनिवेशिक सुधारवाद उपनिवेशवाद के पक्ष में चलता है, जबकि क्रांतिकारी सुधारवाद, जनता के जनतांत्रिक पक्ष का समर्थन करता है। [18] औपनिवेशक सुधारवाद दृष्टिविहिन होता है, यह सारगर्भित राष्ट्रीय परम्पराओं को कुचलते हुए आगे बढ़ता है, और हमेशा विशिष्टवर्ग को संतुष्ट करता है। [19] क्रांतिकारी सुधारवाद दृष्टिसम्पन्न होता है, यह राष्ट्रीय परम्पराओं से विकासशील संबंध रखता है, और सर्वहारा वर्ग के हितों का रक्षण करते हुए बढता है। [20] इस प्रकार औपनिवेशक सुधारवाद मनुष्य को परजीवी बनाता है और एकांगी नवजागरण लाता है, जबकि क्रांतिकारी सुधारवाद लोगों को आत्मसचेत करते हुये समग्र नवजागरण लाता है। [21] इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि बाबा गुरूघासीदास के विवेकवादी दर्शन और सतनाम आंदोलन की टकराहट से जनमानस में राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता की भावना का प्रस्फूटन हुआ जिसकी अभिव्यक्ति भारतीय स्वतंत्रता के युग में राष्ट्रवादी आन्दोलनों में हुई, उनके क्रांतिकारी सुधार आन्दोलनों और नवजागरण के प्रयत्नों से प्रेरित होकर छत्तीसगढ़ प्रदेश के कृषक नेता वीर नारायण सिंह ने सन् 1857 में अंग्रेजो के दकियानुसी, कल्पनाहीन, कुशासन के खिलाफ विद्रोह कर आत्मबलिदान दिया। भारत के अन्य भागों मे भी इसी तरह की बहुत सी घटनाएँ घटी यद्यपि ये प्रयास प्रारम्भिक अवस्था में विफल हो गये। इस तरह बाबा गुरू घासीदास ने भारतीय राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता और लोकतंत्रीय विचार को अपने क्रांतिकारी सुधारवादी आंदोलनो के द्वारा जनता तक फैलाया जिसकी विशेषताएँ बाद के राष्ट्रीय आंदोलन तथा जनतांत्रिक सुधारों के रूप में परिलक्षित हुई। सन् 1850 ई. के आस–पास गुरूघासीदास सतलोक वासी हो गये इसके पश्चात उनके पुत्र गुरू बालकदास जी उत्तराधिकारी हुए। वे इस समाज के लौहपुरूष थे, गुरू बालकदास जी ने सतनामी समाज का राजा होने की सनद ब्रिटिश सरकार से प्राप्त की थी। यह सनद अंग्रेजी राज्य के प्रति भक्ति रखने की बदौलत नही बल्कि इसलिए प्राप्त हुई थी की इस समाज के वे राजा समान थे। अतः इस अधिकार को वैधता प्रदान करने के लिए उन्होनें अंग्रेज सरकार से मांग रखते हुए संघर्ष किया था।

गुरू बालकदास सतनाम पंथ के समस्त अनुयायियों को प्रजातुल्य समझते थे। उनकी सुरक्षा, समाज का संचालन, प्रजा का कल्याण करना अपना कर्तव्य मानते थे। गुरू बालकदास ने समाज को संगठित, शाक्तिशाली और जनता को चरित्रवान बनाने के लिए अखाड़ा–प्रथा की शुरूवात की थी। इससे लोगों में अनुशासन, आत्मबल, उच्च चरित्र और देश भक्ति का विकास हुआ। [22] अखाड़ा पद्धति बाद में राष्ट्रीय सेवादल के आचार संहिता के बतौर काम आई। उन्होनें सतनाम आंदोलन के कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। सतनाम आंदोलन के राष्ट्रवादी जनतांत्रिक प्रभावी, कार्यक्रमों से एक तरफ भारतीय समाज की पुरातनवादी व्यवस्था को चुनौती मिली, वही दूसरी ओर ब्रिटिश शासन को चूले हिलने लगी। फलतः बालक दास जी को अंग्रेजों और कतिपय कट्टरपंथियों के संयुक्त षडयंत्र का शिकार होना पड़ा। सन् 1860 के आसपास अंग्रेजों ने उनकी हत्या करवा दी। [23] स्वतंत्रता संघर्ष के महाअनुष्ठान में सोनाखान के नर केसरी नारायण सिंह के बाद प्रदेश के बलिदान होने वाले, वे दूसरे वीर पुरूष थे। इस घटना के साथ ही सतनाम आन्दोलन का द्वितीय काल समाप्त होता है। कालान्तर में जब गुरू अगमदास उत्तराधिकारी हुए तब सतनाम आन्दोलन उनके नेतृत्व में सामाजिकों और अंचल के जन सहयोग से पुनः गतिमान हो उठा। गुरू अगमदास अपने समय के लोक नायक माने जाते है। उन्हें सतनाम आन्दोलन को संचालित करने में काफी जनसमर्थन और सहयोग मिला। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना और कार्यक्रम के अनुसार देश में उदारवादी आन्दोलन चला, तब इस समय गो वंश की रक्षा और गो हत्या रोकने के मुद्दों को सतनाम आन्दोलन का नया राष्ट्रीय कार्यक्रम घोषित कर गो हत्या बंद आन्दोलन सन् 1914 से 1924 ई. तक सफलता पूर्वक चलाया। [24] सन् 1920 में भारत की राजनीतिक क्षितिज पर गांधी जी का आविर्भाव हुआ। फलतः सतनाम आन्दोलन गांधी युग में गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन में अन्तर्वेशित हो गया और भारत की आजादी तक अपने मूल सिद्धान्तों को सहेजे हुए क्रियाशीलता बनाये रखा।

**निष्कर्ष**

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय नवजागरण और स्वतंत्रता आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में गुरूघासी दास और उनके द्वारा प्रणीत सतनाम–आन्दोलन के पृष्ठभूमि को शोध परक अध्ययन कर तथ्यात्मक और प्रमाणिक तौर पर प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है।

छत्तीसगढ़ की पावन भूमि एवं जनमानस में गुरूघासीदास जी के सतनाम सिद्धान्त, शिक्षाएँ उनके उद्देश्य कार्य रचा–बसा हुआ है तथा उनके आदर्शो को केन्द्रीय मूल्य के रूप में पहचान मिली है। गुरूजी के व्यक्तित्व एवं आदर्श सामाजिक समरसता सौहार्द्र, भाई–चारे और मानवता की दिशा में हमेशा के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। भारतीय इतिहास और राष्ट्रीय परिदृश्य में सन्त गुरू घासीदास के योगदान को समुचित स्थान मिलने से भारत के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ेगा तथा देश का इतिहास समृद्ध होगा। इतना ही नही राष्ट्रीय धारा में स्थान मिलने से समाहित होने से भारतीय राष्ट्रीयता को सबल बनाने के लिए एक नया आधार मिलेगा।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

1. *प्रकाश बुद्ध– हरियाणा का इतिहास, एक सर्वेक्षण–पृ 51*
2. *उक्त–पृ 52*
3. *ढिण्ढे, घनाराम–सतनामी इतिहास और गुरूघासीदास– पृ 17*
4. *देसाई.ए.आर.– भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि –पृ 193*
5. *श्रीवास्तव, डी.पी.– भारत के राजनीतिक पुनर्जागरण पर धार्मिक आंदोलन का प्रभाव–पृ 06*
6. *शुक्ल डॉ. हीरालाल – गुरूघासीदास संघर्ष, समन्वय और सिद्धान्त –पृ 184–188*
7. *सुमित, सरकार– आधुनिक भारत –पृ 61*
8. *शर्मा, रामविलास – स्वाधीनता संग्राम के बदलते परिप्रेक्ष्य – पृ 121*
9. *पूवर्रेक्त– पृ 121*
10. *पूवर्रेक्त– पृ 122*
11. *पूवर्रेक्त –पृ 122*
12. *पूवर्रेक्त – पृ 123*
13. *ठाकुर, हरि– युग पुरूष गुरूघासीदास– पृ 13*
14. *कनौजे, मेघनाथ – दिव्य ज्ञान के ज्योतिपुरूष गुरूघासीदास – पृ 05*
15. *कैप्टन, जे. फोरसिथ – दि हाइलैण्ड आफ सेंन्ट्रल इंडिया – पृ 328*
16. *अमीन शाहिद, पाण्डे ज्ञानेन्द्र– निम्नवर्गीय प्रसंग –भाग 1–पृ 144*
17. *शंभूनाथ – दूसरे नवजागरण की ओर –पृ 09*
18. *पूर्वोक्त– पृ 09*
19. *पूर्वोक्त– पृ 09*
20. *पूर्वोक्त–पृ 09*
21. *ठाकुर, हरि– युग पुरूष गुरूघासीदास–पृ 14*
22. *सोनी जे आर – सतनाम के अनुयायी –पृ 13*
23. *रसेल एण्ड हीरालाल– ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ दी जनरल प्रॉविसेंस आफ इंडिया –पृ 310*
24. *ढिण्ढे, घनाराम– सम्पादक, सत्यदर्शन स्मारिका –पृ 08*